विष्णुसहस्त्रनामावली

विष्णुसहस्रनामावली

प्रकाशक :—

प्रेमनाथ शास्त्री

मूल्य : 15 रु०

लक्ष्मी प्रिंटिंग वर्क्स
लाल कुआं, देहली-6

पुष्पार्चन

ष्टदेव को सन्तुष्ट करने, मानसिक शान्ति, तथा हर मनोकामना सिद्धि के लिए ष्पार्चन एक सरल तथा सुगम मार्ग है, हम जब भी चाहें- हर एक व्रत महोत्सव, र्व अथवा जन्म दिन आदि पर जब हम कोई महान् यज्ञ करने में असमर्थ हूँ अवश्य पुष्पार्चन रूपी यज्ञ का प्रोग्राम बनायें।

ष्णु भगवान् ने शंकर भगवान् को सन्तुष्ट कराने के लिए **"सहस्त्रपुष्पार्चन्"** कया परन्तु अन्त में हजार पुष्प में एक कम होने पर भक्ति के आवेश में अपना त्रकमल हजारवें पुष्प के रूप में अर्पण किया, जिस के फलस्वरूप विष्णु को गवान् शंकर से सुदर्शनचक्र प्राप्त हुआ।

ष्पदन्ताचार्य ने फूल न मिलने पर फूलों के स्थान पर अपने 32 दांत पुष्पार्चन रूप में अर्पण करते हुये महिम्नस्तोत्र के 32 श्लोकों का उच्चारण किया, गवद्गीता में भगवान् कहते हैं **"पत्रं पुष्पं फलं तोयं"** इन प्रमाणों से स्पष्ट पुष्पार्चन का पूजा विधान भारतीय पूजा क्रम में प्राचीन काल से प्रचलित है।

सस्त्रपुष्पार्चन विधिः–

स पूजा में इष्ट देवता के सहस्त्रनाम के साथ आरम्भ में "ॐ" और अन्त में **नमः"** जोड़कर एक-एक नाम से इष्टदेव पर पुष्प चढ़ाया जाता है, इस पूजा के लिये पुष्प पर्याप्तमात्रा में होने चाहिये (पुष्प की पत्तियाँ अलग अलग करके ूजा में प्रयोग न करें, फूल खण्डित ना हो) पुष्पार्चन के लिये किसी कमरे में वच्छ आसन बिछायें, जहाँ सभी भक्तजन सामूहिक रूप से पूजा में सम्मिलित ो सकें, जो पूजा का मुख्यकर्त्ता अथवा यजमान होगा उसको चाहिये पद्मासन ं बैठकर अपने सामने इष्टदेव की मूर्ति उस ढंग से रखे ताकि आप को फूल र्पण करने में कोई रुकावट न पड़े पूजा के आरम्भ पर रत्नदीप तथा धूप आदि लाकर इष्टदेव की मूर्ति को तिलक लगाकर फूलों की मालाओं से सजाइये, पहले ाप (यजमान) धूपदीप करे जो इसी पुस्तक में अलग दर्ज है, पूजा में सम्मिलित ोने वालों में से जो सहस्त्रनामावली का उच्चारण कर सके एक एक नाम के

आरम्भ में "ॐ" और अन्त में "**नमः**" जोड़कर इष्टदेवता पर फूल चढ़ायें जै
ॐ महाविद्यायैः नमः, ॐ जगत् मात्रेः नमः "ॐ नारायणाय नमः" ॐ
शिवाय नमः" जो भक्तजन पूजा में सम्मिलित होंगे वे भी हरनाम के साथ "**नमः**"
का सामूहिक रूप से उच्चारण किया करें। **यज्ञ में स्वाहा, पुष्पार्चन में नमः**
का प्रयोग होता है।

हर 100 वीं पुष्पांजलि अर्पण करने के समय इष्टदेव का वैदिक मन्त्र अवश्
पढें जो इसी पुस्तक में दर्ज है।

हजारवीं पुष्पाँजलि डालते समय सभी भक्त खड़े होकर वैदिकमन्त्र और इष्टदे
का कोई श्लोक पढ़कर अन्तिम पुष्पांजलि श्रद्धा से अर्पण करके तर्पण करें–जै
कि पूजाविधि में दर्ज है आरती आदि करके प्रप्युन करके प्रसाद बाटें।

धूपदीप विधिः

पूजा के लिये रखे गये निर्माल्य के पात्र में जल की धारा डालते हुये पढें :
ॐ अस्य श्री–आसन–शोधन–मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ–ऋषिः सुत
छन्दः, कूर्मो देवता–आसन–शोधने विनियोगः।

पृथ्वी माता को नमस्कार करते हुए पढें :–**पृथ्वी त्वया धृता लोका दे**
त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्
आसन के रूप में पृथ्वी माता को दर्भ अथवा फूल अर्पण करते हुये पढें :
ध्रुवा द्यौर्–ध्रुवा–पृथ्वी, ध्रवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वम्–इ
जगत् ध्रुवो राजा विशाम्–असि। तिलक–फूल–अर्घ्य चढाते हुये पढें :
प्रीं पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्
नमः। नमस्कार करते हुए पढें :– **शुक्लाम्बरधंर विष्णुं शशिव**
चतुर्भुजम्। प्रसन्न–वदनं ध्याये सर्व–विघ्नोप–शान्तये
अभि–प्रीतार्थ–सिद्धचर्थं पूजितो यः सैरैर्–अपि। सर्व विघ्नच्छि
तस्मै गणाधि–पतये नमः।

गुरुः ब्रह्मा, गुरुः विष्णुः गुरुः–साक्षात्–महेश्वरः। गुरुर्–ए
जगत्सर्वं तस्मै श्री गुरु–वे नमः।। ॐ गुरवे नमः, परम गुर

मः, पर-मेष्ठिने गुरवे नमः, परमा-चार्याय नमः आदि
सद्धिभ्यो नमः

ंग न्यास-कीजिये अंगन्यास करके चारों दिशाओं की ओर तिल फँकते हुये पढें:-

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिता, ये भूता विघ्नकर्तारः-ते
श्यन्तु शिवाज्ञया।।

णायाम कीजिये, प्राणायाम करके मुँह और पैरों को छिडकते हुये पढें :-

ीर्थे स्नेयं तीर्थम्-एव समानानां भवति मानः, शंस्योर्-अर-रुषो
र्तिः प्राणङ्-मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते।

नामिका अंगुली के ऊपर वाले पर्व पर पवित्र-धारण करते हुये पढें :-

सोः पवित्रम्-असि शतधारं वसूनां पवित्रम्-असि,
हस्त्र-धारम्-अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला
वन्तीः। जंग चावल आदि लाकर तिलक करना

पने आपको तिलक अक्षत धूप चढ़ाते हुये पढें :-

रमात्मने पुरु-षोत्तमाय पंचभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय
ाधार-शक्त्यै समाल-भनं गन्धो नमः-अर्घो नमः पुष्पं नमः।

ंग (धीप) को तिलक अक्षत फूल चढाते हुये पढें :-

स्वप्रकाशो-महादीपः सर्वत-स्तिमिरा-पहः। प्रसीद नम गोविन्द
ीपोयं प्रतिकल्पितः। भो दीप देव-रूवपस्त्वं कर्म-समाप्तिः
ाक्त् स्यात्-तावत् त्वं स्थिरो भव।

यदिवता के निमित्त निर्माल्यपात्र में तिलक अक्षत फूल डालते हुये पढें :-

त्रास्ति माता न पिता न बन्धुः-भ्रतापि नो यत्र सुहृत्-जनश्च
ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः-तत्रात्म-दीपं शरणं प्रपद्ये। आत्मने
रायणाय आधार-शक्त्यै दीप-धूप-संकल्पात्-सिद्धिर-अस्तु
पो नमः धूपो नमः। ॐ तत्-सत्-ब्रह्म अद्यतावत्-तिथौ-अद्य
.. मासस्य ..... पक्षस्य तिथौ ..... वासरे दीपोनमः
पोनमः।

विष्णुसहस्त्रनाम स्वाहाकार पूजन विधिः

अग्नि में फूल डालते हुये पढें :-

ॐ नमो नारायणाय-शुक्लाम्बरधरं विष्णुं राशि व
चतुर्भजुम्-प्रसन्न-वदनं ध्यायेत्-सर्व-विघ्नोप-शान्तये।

श्री महादेव उवाच-ब्रह्महत्या सहस्त्रस्य पापं शाम्येत्-कथंच
न-पुनः त्वत्-अवज्ञाने कल्पकोटि-शतैर्-अपि, यस्मात्-त्व
कृतस्पर्धः पवित्रं स्यां कथं हरे। तन्मे कथम देवेश प्रायश्चि
यथा तथा।। श्री भगवान्-उवाच-सदा नाम सहस्त्रं मे पाव
मत्-पदावहम्। तत्-पठ-अनुदिनं शम्भो। सर्वैश्वर्य यदेच्छसि

श्री महादेव उवाच-तम्-एव तपसा नित्यं भजामि स्तौमि चिन्त
तेन-अद्वितीय-महिमा जगत-पूज्योस्मि पावति।।

श्री पार्वती उवाच :-तत्-मे कथम देवेश-यथाहम्-अपि शंक
सर्वेश्वरी निर्-उपमा तव-स्यां सदृशी प्रभो।

श्री महादेव-उवाचः-साधु साधु त्वया पृष्टं विष्णो-र्भगवतः प्रभ
नाम्ना सहस्त्रं वक्ष्यामि मुख्यं त्रैलोक्य-मुक्तिदम्।

(अंगन्यास) ॐ नमः हृदयाय नमः, "ना" शिरसे स्वाहा "रा
शिखायै वषट् "य" कवचाय हुँ "णा" नेत्राभ्यां वौषट् "य
अस्त्राय फट्।।

(करन्यास) ॐ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः, "ना" तर्जनीभ्यां नमः "रा
मध्यमाभ्यां नमः "य" अनामिकाभ्यां नमः "णा" कनिष्ठकाभ्
नमः "य" करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

तर्पण-

अस्य श्री वासुदेव-सहस्त्रनामस्य श्रीमहादेव ऋषिः, अनुष्टु
छन्दः, श्रीकृष्ण परमात्मा देवता, प्रणवो बीजं हरिः शक्ति
आत्मनो, वाग्मनः कायोपार्जित-पा-निवार-णार्थं श्री
विष्णु-प्रीत्य-र्थे पाठे, होमे, पुष्पार्चने विनियोगः।

ाणायाम करके दोनों हाथों में फूल पकड़कर (ध्यान) पढिये –

शान्ताकारं भुजगशयंन पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्। लक्ष्मी-कान्तं कमलनयनं योगिभि-र्ध्यान-गम्यं वन्दे विष्णुं भवभय-हरं सर्वलोकैक-नाथम्।

अग्नि में आहुति डालते हुये पढें :–

(1) ॐ वासुदेवाय विद्महे स्वाहा, लक्ष्मी नारायणा धीमहि स्वाहा तत्-नो विष्णुः प्रचोदयात्-स्वाहा।

(2) ॐ वासुदेवाय विद्महे, लक्ष्मी नारायणाय धीमहि स्वाहा, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात, स्वाहा

(3) ॐ वासुदेवाय विद्महे-लक्ष्मीनारायणा धीमहि तन्नोविष्णुः-प्रचोदयात्-स्वाहा।

अब सावधानी से दोनों आहुति डालने वाला और यजमान एक एक नाम से प्रज्वलित अग्नि में आहुति डालें। हर एक नाम के आरम्भ में 'ॐ' तथा अन्त में 'नमः' शब्द का उच्चारण करें। ऐसे ही क्रमशः 100वी, 200वीं, 300वीं आहुति डालने से पूर्व 'स्रुक' (जिस में एक रन्ध्र होता है) से 'स्रुव' को घी से चार बार स्पर्श करते हुये पढ़ें 'तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धमासि' पहले निचले रन्ध्र को फिर दो बार ऊपर के रन्ध्र को, फिर स्रुव के निचले रन्ध्र को एक बार स्पर्श करके, स्रुव पर श्रीफल, कन्द या अखरोट रखकर यवतिल की भी अंजलि हाथ में लेकर वैदिक मन्त्र जो कि इसी पुस्तक में स्तुति के रूप में दर्ज है हर 100वें नाम की आहुति डालें। अन्तिम यानी 999 वी आहुति तक अग्नि में आहुति डालकर अन्त में फूल अग्नि में डालते हुये पढ़ें :– पार्वती-उवाच-**विष्णो-नाम सहस्त्रं तत्-प्रत्यहं वृषभ-ध्वज नाम्नैकेन तु येन स्यातु, तत्-फलं ब्रूहि मे प्रभो।** श्री महादेव उवाच-**रकारादीनि नामानि श्रृण्वतो मम पार्वति मनः प्रसन्नताम्-एति राम-नामाभि-शंकया, रमन्ते-योगिनो यत्र सदानन्दे चिदात्मनि, इति राम पदेनासौ परं-ब्रह्म-अभिधीयते। श्रीराम रामरामेति रमे रामे मनोरमे सहस्त्रनाम तत्-तुल्यं रामनाम वरानने।**

तर्पण करते हुये पढें –

अनने विष्णु-स्वाहाकार होमेन भगवान् वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नः अनिरुद्धः सत्यः पुरुषः अच्युतः माधवः गोविन्दः सहस्त्रनामा विष्णु लक्ष्मीसहितः-नारायणः प्रीयतांप्रीतोस्तु।

विष्णुस्तुतिः

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव (1)

शान्ताकारं भुजग-शयनं, पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगन-सुदृशं, मेघ-वर्णं शुभांगम्
लक्ष्मी-कांतं कमल-नयनं, योगिभि-र्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भव-भयहरं, सर्व-लोकैक- नाथम् (2)

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र-रुद्रमरूतः स्तुवन्ति दिव्यैःस्तवै
वेदैः सांगपद-क्रमोप-निषदै-र्गायन्ति यं सामगाः
ध्याना-वस्थित-तत्-गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरा-सुर-गणा, देवाय तस्मै नमः (3)

ध्येयः सदा परिभवघ्नम्-अभीष्टदोहं,
तीर्थास्पदं शिव-विरिंचि-नुतं शरण्यम्
भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धियपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम् (4)

त्यक्त्वा सुदुस्त्यज-सुरेप्तिसत-राज्य-लक्ष्मीं
धर्मिष्ट-आर्य वचसा यत्-आगत्-अरण्यम्
मायामृगं दयित-येप्सितम्-अनुधावत्
वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम् (5)

श्रीमत्-सरोरुह-यवांकुश- चक्र-चाप
मत्स्यां-कितं नव-विलोहित-पल्लवाभम्
लक्ष्म्या-लयं परम-मंगलम्-आत्मरूपं
वन्दे महापुरुष ते चरणार-बिन्दम् (6)
वृन्दा-वनान्तरम्-अगात्-अनुगोकुलानां
संचार्य सर्व-पशुभिः-स्व-विवृद्धि-कामी
सञ्चिन्त-यत्-अजगुरो-मृग-पक्षिणां यत्
वन्दे महापुरुष ते तरणार-बिन्दम् (7)
यत्-गोपिका विरहजाग्नि-परीतदेहाः
तप्तस्तनेषु विजहुः परिरभ्य तापम्
रासे त्वदीय कुच-कुंकुम-पंकलिप्तम्
वन्दे महापुरुष ते चरणार बिन्दम् (8)
कालीय-मस्तक-विघटन-दक्षम्-अस्य
मोक्षोप्सुभि-विर्हदीन-मुखाभिर्-आरात्
तत्-पत्निभिः स्तुतम्-अशेष-निकाम-रूपं
वन्दे महापुरुष ते चरणार बिन्दम् (9)
ज्ञानालयं श्रुति-विमृग्यम्-अनादिम्
अर्च्यंब्रह्मा-दिभि-र्हृदि विचिन्त्यम्-अगाध-बौधैः
संसार-कूप-पतितो-त्तारणाव-लम्बं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् (10)

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ विश्वस्मै नमः

ॐ विष्णवे नमः

ॐ वषट्काराय नमः

ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः

ॐ भूतकृते नमः

ॐ भूतभृते नमः

ॐ भावाय नमः

ॐ भूतात्मने नमः

ॐ भूतभावनाय नमः

ॐ पूतात्मने नमः

ॐ परमात्मने नमः

ॐ मुक्तानां परमायै-
गतये नमः

ॐ अव्ययाय नमः

ॐ पुरुषाय नमः

ॐ साक्षिणे नमः

ॐ क्षेत्रज्ञाय नमः

ॐ अक्षराय नमः

ॐ योगाय नमः

ॐ योगविदां नेत्रे नमः

ॐ प्रधान,पुरुषेश्वराय नमः

ॐ नारसिंह,वपुषे नमः

ॐ श्रीमते नमः

ॐ केशवाय नमः

ॐ पुरुषोत्तमाय नमः

ॐ सर्वाय नमः

ॐ शर्वाय नमः

ॐ शिवाय नमः

ॐ स्थाणवे नमः

ॐ भूतादये नमः

ॐ निधये अव्ययाय नमः

ॐ संभवाय नमः

ॐ भावनाय नमः

ॐ भर्त्रे नमः

ॐ प्रभवाय नमः

ॐ प्रभवे नमः

ॐ ईश्वराय नमः

ॐ स्वयंभुवे नमः

ॐ शंभवे नमः

ॐ आदित्याय नमः

ॐ पुष्कराक्षाय नमः

ॐ महास्वनाय नमः

ॐ अनादिनिधिनाय नमः

ॐ धात्रे नमः

ॐ विधात्रे नमः

ॐ धातुरुत्तमाय नमः

ॐ अप्रमेयाय नमः

ॐ हृषीकेशाय नमः

ॐ पद्मनाभाय नमः

ॐ अमर,प्रभवे नमः

ॐ विश्वकर्मणे नमः

ॐ मनवे नमः

ॐ त्वष्ट्रे नमः

ॐ स्थविष्ठाय नमः

ॐ स्थविराय ध्रुवाय नमः

ॐ अग्राह्याय नमः

ॐ शाश्वताय नमः

ॐ कृष्णाय नमः

ॐ लोहिताक्षाय नमः

ॐ प्रतर्दनाय नमः

ॐ प्रभूताय नमः

ॐ त्रिककुब्धाम्ने नमः

ॐ पवित्राय नमः

ॐ मंगलाय परस्मै नमः

ॐ ईशानाय नमः

ॐ प्राणदाय नमः

ॐ प्राणाय नमः

ॐ ज्येष्ठाय नमः

ॐ श्रेष्ठाय नमः

ॐ प्रजापतये नमः

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

ॐ भूगर्भाय नमः

ॐ माधवाय नमः

ॐ मधुसूदनाय नमः

ॐ ईश्वराय नमः

ॐ विक्रमिणे नमः

ॐ धन्विने नमः

ॐ मेधाविने नमः

ॐ विक्रमाय नमः

ॐ क्रमाय नमः

ॐ अनुत्तमाय नमः

ॐ दुराधर्षाय नमः

ॐ कृतज्ञाय नमः

ॐ कृतये नमः

ॐ आत्मवते नमः

ॐ सुरेशाय नमः

ॐ शरणाय नमः

ॐ शर्मणे नमः

ॐ विश्वरेतसे नमः

ॐ प्रजाभवाय नमः

ॐ अह्ने नमः

ॐ संवत्सराय नमः

ॐ व्यालाय नमः

ॐ प्रत्ययाय नमः

ॐ सर्वदर्शनाय नमः

ॐ अजाय नमः

ॐ सर्वेश्वराय नमः

ॐ सिद्धाय नमः

ॐ सिद्धये नमः

ॐ सर्वादये नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ अच्युताय नमः१००

ॐ वृषाकपये नमः

ॐ अमेयात्मने नमः

ॐ सर्वयोग-
विनिःसृताय नमः

ॐ वसवे नमः

ॐ वसुमनसे नमः

ॐ सत्याय नमः

ॐ समात्मने नमः

ॐ संमिताय नमः

ॐ समाय नमः

ॐ अमोघाय नमः

ॐ पुंडरीकाक्षाय नमः

ॐ वृषकर्मणे नमः

ॐ वृषाकृतये नमः

ॐ रुद्राय नमः

ॐ बहुशिरसे नमः

ॐ बभ्रवे नमः

ॐ विश्वयोनये नमः

ॐ शुचिश्रवसे नमः

ॐ अमृताय नमः

ॐ शाश्वतस्थाणवे नमः

ॐ वरारोहाय नमः

ॐ महातपसे नमः
ॐ सर्वगाय नमः
ॐ सर्वविद्भानवे नमः
ॐ विष्वक्सेनाय नमः
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ वेदाय नमः
ॐ वेदविदे नमः
ॐ अव्यंगाय नमः
ॐ वेदांगाय नमः
ॐ वेदविदे नमः
ॐ कवये नमः
ॐ लोकाध्यक्षाय नमः
ॐ सुराध्यक्षाय नमः

ॐ धर्माध्यक्षाय नमः

ॐ कृताकृताय नमः

ॐ चतुरात्मने नमः

ॐ चतुर्व्यूहाय नमः

ॐ चतुंर्दष्ट्राय नमः

ॐ चतुर्भुजाय नमः

ॐ भ्राजिष्णवे नमः

ॐ भोजनाय नमः

ॐ भोक्त्रे नमः

ॐ सहिष्णवे नमः

ॐ जगदादिजाय नमः

ॐ अनघाय नमः

ॐ विजयाय नमः

ॐ जेत्रे नमः

ॐ विश्वयोनये नमः

ॐ पुनर्वसवे नमः

ॐ उपेंद्राय नमः

ॐ वामनाय नमः

ॐ प्रांशवे नमः

ॐ अमोघाय नमः

ॐ शुचये नमः

ॐ ऊर्जिताय नमः

ॐ अतींद्राय नमः

ॐ संग्रहाय नमः

ॐ सर्गाय नमः

ॐ धृतात्मने नमः

ॐ नियमाय नमः

ॐ यमाय नमः

ॐ वेद्याय नमः

ॐ वैद्याय नमः

ॐ सदायोगिने नमः

ॐ वरिघ्ने नमः

ॐ माधवाय नमः

ॐ मधवे नमः

ॐ अतींद्रियाय नमः

ॐ महामायाय नमः

ॐ महोत्साहाय नमः

ॐ महाबलाय नमः

ॐ महाबुद्धये नमः

ॐ महावीर्याय नमः

ॐ महाशक्तये नमः

ॐ महाद्युतये नमः

ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः

ॐ श्रीमते नमः

ॐ अमेयात्मने नमः

ॐ महाद्रिधृषे नमः

ॐ महेष्वासाय नमः

ॐ महीभर्त्रे नमः

ॐ श्रीनिवासाय नमः

ॐ सतां गतये नमः

ॐ अनिरुद्धाय नमः

ॐ सुरानंदाय नमः

ॐ गोविंदाय नमः

ॐ गोविदांपतये नमः

ॐ मरीचये नमः

ॐ दमनाय नमः

ॐ हंसाय नमः

ॐ सुपर्णाय नमः

ॐ भुजगोत्तमाय नमः

ॐ हिरण्यनाभाय नमः

ॐ सुतपसे नमः

ॐ पद्मनाभाय नमः

ॐ प्रजापतये नमः

ॐ अमृत्यवे नमः

ॐ सर्वदृशे नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सिंहाय नमः २००

ॐ संधात्रे नमः

ॐ संधिमते नमः

ॐ स्थिराय नमः

ॐ अजाय नमः

ॐ दुर्मर्षणाय नमः

ॐ शास्त्रे नमः

ॐ न्यायाय नमः

ॐ नेत्रे नमः

ॐ समीरणाय नमः

ॐ सहस्रामूर्ध्ने नमः

ॐ विश्वात्मने नमः

ॐ सहस्त्रक्षाय नमः

ॐ सहस्त्रपदे नमः

ॐ आवर्तनाय नमः

ॐ निवृत्तात्मने नमः

ॐ संवृताय नमः

ॐ संप्रमर्दनाय नमः

ॐ अहःसंवर्तकाय नमः

ॐ वह्नये नमः

ॐ अनिलाय नमः

ॐ धरणीधराय नमः

ॐ विश्रुतात्मने नमः

ॐ सुरारिघ्ने नमः

ॐ गुरवे नमः

ॐ गुरुतमाय नमः

ॐ धाम्ने नमः

ॐ सत्याय नमः

ॐ सत्यपराक्रमाय नमः

ॐ निमिषाय नमः

ॐ अनिमिषाय नमः

ॐ स्त्रग्विणे नमः

ॐ वाचस्पतये उदारधिये नमः

ॐ अग्रण्ये नमः

ॐ ग्रामण्ये नमः

ॐ श्रीमते नमः

ॐ सुप्रसादाय नमः

ॐ प्रसन्नात्मने नमः

ॐ विश्वधृषे नमः

ॐ विश्वभुजे नमः

ॐ विभवे नमः

ॐ सत्कर्त्रे नमः

ॐ सत्कृताय नमः

ॐ साधवे नमः

ॐ जह्नवे नमः

ॐ नारायणाय नमः

ॐ नराय नमः

ॐ असंख्येयाय नमः

ॐ अप्रमेयात्मने नमः

ॐ विशिष्टाय नमः

ॐ शिष्टकृते नमः

ॐ शुचये नमः

ॐ सिद्धार्थाय नमः

ॐ सिद्धसंकल्पाय नमः

ॐ सिद्धिदाय नमः

ॐ सिद्धिसाधनाय नमः

ॐ वृषाहिणे नमः

ॐ वृषभाय नमः

ॐ विष्णवे नमः

ॐ वृषपर्वणे नमः

ॐ वृषोदराय नमः

ॐ वर्धनाय नमः

ॐ वर्धमानाय नमः

ॐ विविक्ताय नमः

ॐ श्रुतिसागराय नमः

ॐ सुभुजाय नमः

ॐ दुर्धराय नमः

ॐ वाग्मिने नमः

ॐ महेंद्राय नमः

ॐ वसुदाय नमः

ॐ वसवे नमः

ॐ नैकरूपाय नमः

ॐ बृहद्रूपाय नमः

ॐ शिपिविष्टाय नमः

ॐ प्रकाशनाय नमः

ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः

ॐ प्रकाशात्मने नमः

ॐ प्रतापनाय नमः

ॐ ऋद्धाय नमः

ॐ स्पष्टाक्षराय नमः

ॐ मंत्राय नमः

ॐ चंद्रांशवे नमः

ॐ भास्करद्युतये नमः

ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः

ॐ भानवे नमः

ॐ शशिबिंदवे नमः

ॐ सुरेश्वराय नमः

ॐ औषधाय नमः

ॐ जगतःसेतवे नमः

ॐ सत्यधर्मपराक्रमाय नमः

ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय नमः

ॐ पवनाय नमः

ॐ पावनाय नमः

ॐ अनलाय नमः

ॐ कामघ्ने नमः

ॐ कामकृते नमः

ॐ कांताय नमः

ॐ कामाय नमः

ॐ कामप्रदाय नमः

ॐ प्रभवे नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ युगादिकृते नमः ३००

ॐ युगावर्ताय नमः

ॐ नैकमायाय नमः

ॐ महाशनाय नमः

ॐ अदृश्याय नमः

ॐ अव्यक्तरूपाय नमः

ॐ सहस्त्रजिते नमः

ॐ अनंतजिते नमः

ॐ इष्टाय नमः

ॐ विशिष्टाय नमः

ॐ शिष्टेष्टाय नमः

ॐ शिखंडिने नमः

ॐ नहुषाय नमः

ॐ वृषाय नमः

ॐ क्रोधघ्ने नमः

ॐ क्रोधकृत्कर्त्रे नमः

ॐ विश्वबाहवे नमः

ॐ महीधराय नमः

ॐ अच्युताय नमः

ॐ प्रथिताय नमः

ॐ प्राणाय नमः

ॐ प्राणदाय नमः

ॐ वासवानुजाय नमः

ॐ अपांनिधये नमः

ॐ अधिष्ठानाय नमः

ॐ अप्रमत्ताय नमः

ॐ प्रतिष्ठिताय नमः

ॐ स्कंदाय नमः

ॐ स्कंदधराय नमः

ॐ धुर्याय नमः

ॐ वरदाय नमः

ॐ वायुवाहनाय नमः

ॐ वासुदेवाय नमः

ॐ बृहद्भानवे नमः

ॐ आदिदेवाय नमः

ॐ पुरंदराय नमः

ॐ अशोकाय नमः

ॐ तारणाय नमः

ॐ ताराय नमः

ॐ शूराय नमः

ॐ शौरये नमः

ॐ जनेश्वराय नमः

ॐ अनुकूलाय नमः

ॐ शतावर्ताय नमः

ॐ पद्मिने नमः

ॐ पद्मनिभेक्षणायनाय नमः

ॐ पद्मनाभाय नमः

ॐ अरविंदाक्षाय नमः

ॐ पद्मगर्भाय नम

ॐ शरीरभृते नमः

ॐ महर्द्धये नमः

ॐ ऋद्धाय नमः

ॐ वृद्धात्मने नमः

ॐ महाक्षाय नमः

ॐ गरुड्ध्वजाय नमः

ॐ अतुलाय नमः

ॐ शरभाय नमः

ॐ भीमाय नमः

ॐ समयज्ञाय नमः

ॐ हविर्हरये नमः

ॐ सर्वलक्षणलक्षणाय नमः

ॐ लक्ष्मीवते नमः

ॐ समितिंजयाय नमः

ॐ विक्षराय नमः

ॐ रोहिताय नमः

ॐ मार्गहेतवे नमः

ॐ दामोदराय नमः

ॐ सहाय नमः

ॐ महीधराय नमः

ॐ महाभागाय नमः

ॐ वेगवते नमः

ॐ अमिताशनाय नमः

ॐ उद्भवाय नमः

ॐ क्षोभणाय नमः

ॐ देवाय नमः

ॐ श्रीगर्भाय नमः

ॐ परमेश्वराय नमः

ॐ करणाय नमः

ॐ कारणाय नमः

ॐ कर्त्रे नमः

ॐ विकर्त्रे नमः

ॐ गहनाय नमः

ॐ गुहाय नमः

ॐ व्यवसायाय नमः

ॐ व्यवस्थानाय नमः

ॐ संस्थानाय नमः

ॐ स्थानदाय नमः

ॐ ध्रुवाय नमः

ॐ परर्द्धये नमः

ॐ परमाय नमः

ॐ स्पष्टाय नमः

ॐ तुष्टाय नमः

ॐ पुष्टाय नमः

ॐ शुभेक्षणाय नमः

ॐ रामाय नमः

ॐ विरामाय नमः

ॐ विरजाय नमः

ॐ मार्गाय नमः

ॐ नेयाय नमः

ॐ नयाय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ अनयाय नमः ४००

ॐ वीराय नमः

ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः

ॐ धर्माय नमः

ॐ धर्मविदुत्तमाय नमः

ॐ वैकुंठाय नमः

ॐ पुरुषाय नमः

ॐ प्राणाय नमः

ॐ प्राणदाय नमः

ॐ प्रणवाय नमः

ॐ पृथवे नमः

ॐ हिरण्यगर्भाय नमः

ॐ शत्रुघ्नाय नमः

ॐ व्याप्ताय नमः

ॐ वायवे नमः

ॐ अधोक्षजाय नमः

ॐ ऋतवे नमः

ॐ सुदर्शनाय नमः

ॐ कालाय नमः

ॐ परमेष्ठिने नमः

ॐ परिग्रहाय नमः

ॐ उग्राय नमः

ॐ संवत्सराय नमः

ॐ दक्षाय नमः

ॐ विश्रामाय नमः

ॐ विश्वद्दाक्षिणाय नमः

ॐ विस्ताराय नमः

ॐ स्थावरस्थाणवे नमः

ॐ प्रमाणाय नमः

ॐ बीजायाव्ययायनाय नमः

ॐ अर्थाय नमः

ॐ अनर्थाय नमः

ॐ महाकोशाय नमः

ॐ महाभोगाय नमः

ॐ महाधनाय नमः

ॐ अनिर्विण्णाय नमः

ॐ स्थविष्ठाय नमः

ॐ अभुवे नमः

ॐ धर्मयूपाय नमः

ॐ महामखाय नमः

ॐ नक्षत्रनेमये नमः

ॐ नक्षत्रिणे नमः

ॐ क्षमाय नमः

ॐ क्षामाय नमः

ॐ समीहनाय नमः

ॐ यज्ञाय नमः

ॐ ईज्याय नमः

ॐ महेज्याय नमः

ॐ क्रतवे नमः

ॐ सत्राय नमः

ॐ सतांगतये नमः

ॐ सर्वदर्शिने नमः

ॐ विमुक्तात्मने नमः

ॐ सर्वज्ञाय नमः

ॐ ज्ञाननोत्तमाय नमः

ॐ सुव्रताय नमः

ॐ सुमुखाय नमः

ॐ सूक्ष्माय नमः

ॐ सुघोषाय नमः

ॐ सुखदाय नमः

ॐ सुहृदे नमः

ॐ मनोहराय नमः

ॐ जितक्रोधाय नमः

ॐ वीरबाहवे नमः

ॐ विदारणाय नमः

ॐ स्वापनाय नमः

ॐ स्ववशाय नमः

ॐ व्यापिने नमः

ॐ नैकात्मने नमः

ॐ नैककर्मकृते नमः

ॐ वत्सराय नमः

ॐ वत्सलाय नमः

ॐ वत्सिने नमः

ॐ रत्नगर्भाय नमः

ॐ धनेश्वराय नमः

ॐ धर्मगुपे नमः

ॐ धर्मकृते नमः

ॐ धर्मिणे नमः

ॐ सते नमः

ॐ असते नमः

ॐ क्षराय नमः

ॐ अक्षराय नमः

ॐ अविज्ञात्रे नमः

ॐ सहस्रांशवे नमः

ॐ विधात्रे नमः

ॐ कृतलक्षणाय नमः

ॐ गभस्तिनेमये नमः

ॐ सत्वस्थाय नमः

ॐ सिंहाय नमः

ॐ भूतमहेश्वराय नमः

ॐ आदिदेवाय नमः

ॐ महादेवाय नमः

ॐ देवेशाय नमः

ॐ देवभृद्गुरवे नमः

ॐ उत्तराय नमः

ॐ गोपतये नमः

ॐ गोप्त्रे नमः

ॐ ज्ञानगम्याय नमः

ॐ पुरातनाय नमः

ॐ शरीरभूतभृते नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ भोक्त्रे नमः ५००

ॐ कपींद्राय नमः

ॐ भूरिदक्षिणाय नमः

ॐ सोमपाय नमः

ॐ अमृतपाय नमः

ॐ सोमाय नमः

ॐ पुरुजिते नमः

ॐ पुरुसत्तमाय नमः

ॐ विनयाय नमः

ॐ जयाय नमः

ॐ सत्यसंधाय नमः

ॐ दाशार्हाय नमः

ॐ सात्वतांपतये नमः

ॐ जीवाय नमः

ॐ विनयितासाक्षिणे नमः

ॐ मुकुंदाय नमः

ॐ अमितविक्रमाय नमः

ॐ अंभोनिधये नमः

ॐ अनंतात्मने नमः

ॐ महोदधिशयानाय नमः

ॐ अंतकाय नमः

ॐ अजाय नमः

ॐ महार्हाय नमः

ॐ स्वाभाव्याय नमः

ॐ जितामित्राय नमः

ॐ प्रमोदनाय नमः

ॐ आनंदाय नमः

ॐ नंदनाय नमः

ॐ नंदाय नमः

ॐ सत्यधर्मणे नमः

ॐ त्रिविक्रमाय नमः

ॐ महर्षि;कपिलाचार्याय नमः

ॐ कृतज्ञाय नमः

ॐ मेदिनीपतये नमः

ॐ त्रिपदाय नमः

ॐ त्रिदशा,ध्यक्षाय नमः

ॐ महाशृंगाय नमः

ॐ कृतांत,कृते नमः

ॐ महावराहाय नमः

ॐ गोविंदाय नमः

ॐ सुषेणाय नमः

ॐ कनकांगदिने नमः

ॐ गुह्याय नमः

ॐ गभीराय नमः

ॐ गहनाय नमः

ॐ गुप्ताय नमः

ॐ चक्रगदाधराय नमः

ॐ वेधसे नमः

ॐ स्वांगाय नमः

ॐ अजिताय नमः

ॐ कृष्णाय नमः

ॐ दृढाय नमः

ॐ संकर्षणाय नमः

ॐ अच्युताय नमः

ॐ वरुणाय नमः

ॐ वारुणाय नमः

ॐ वृक्षाय नमः

ॐ पुष्कराक्षाय नमः

ॐ महामनसे नमः

ॐ भगवते नमः

ॐ भगघ्ने नमः

ॐ आनंदिने नमः

ॐ वनमालिने नमः

ॐ हलायुधाय नमः

ॐ आदित्याय नमः

ॐ ज्योतिरादित्याय नमः

ॐ सहिष्णवे नमः

ॐ गतिसत्तमाय नमः

ॐ सुधन्वने नमः

ॐ खंडपरशवे नमः

ॐ दारुणाय नमः

ॐ द्रविणप्रदाय नमः

ॐ दिवस्पृशे नमः

ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः

ॐ वाचस्पतये नमः

ॐ अयोनिजाय नमः

ॐ त्रिसाम्ने नमः

ॐ सामगाय नमः

ॐ सामाय नमः

ॐ निर्वाणाय नमः

ॐ भेषजाय नमः

ॐ भिषजे नमः

ॐ संन्यासकृते नमः

ॐ शमाय नमः

ॐ शांताय नमः

ॐ निष्ठाशां-
तिपरायणाय नमः
ॐ शुभांगाय नमः
ॐ शांतिदाय नमः
ॐ स्त्रष्ट्रे नमः
ॐ कुमुदाय नमः
ॐ कुवलेशयाय नमः
ॐ गोहिताय नमः
ॐ गोपतये नमः
ॐ गोप्त्रे नमः
ॐ वृषभाक्षाय नमः
ॐ वृषप्रियाय नमः
ॐ अनिवर्तिने नमः
ॐ निवृत्तात्मने नमः

ॐ संक्षेप्त्रे नमः

ॐ क्षेमकृते नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ शिवाय नमः ६००

ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः

ॐ श्रीवासाय नमः

ॐ श्रीपतये नमः

ॐ श्रीमतांवराय नमः

ॐ श्रीदाय नमः

ॐ श्रीशाय नमः

ॐ श्रीनिवासाय नमः

ॐ श्रीनिधये नमः

ॐ श्रीविभावनाय नमः

ॐ श्रीधराय नमः

ॐ श्रीकराय नमः

ॐ श्रेयसे नमः

ॐ श्रीमते नमः

ॐ लोकत्रयाश्रयाय नमः

ॐ स्वक्षाय नमः

ॐ स्वंगाय नमः

ॐ शतानंदाय नमः

ॐ नंदिने नमः

ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय नमः

ॐ विजितात्मने नमः

ॐ विधेयात्मने नमः

ॐ सत्कीर्तये नमः

ॐ छिन्नसंशयाय नमः

ॐ उदीर्णाय नमः

ॐ सर्वतश्चक्षुषे नमः

ॐ अनीशाय नमः

ॐ शाश्वतस्थिराय नमः

ॐ भूशयाय नमः

ॐ भूषणाय नमः

ॐ भूतये नमः

ॐ विशोकाय नमः

ॐ शोकनाशनाय नमः

ॐ अर्चिष्मते नमः

ॐ अर्चिताय नमः

ॐ कुंभाय नमः

ॐ विशुद्धात्मने नमः

ॐ विशोधनाय नमः

ॐ अनिरुद्धाय नमः

ॐ अप्रतिस्थाय नमः

ॐ प्रद्युम्नाय नमः

ॐ अमितविक्रमाय नमः

ॐ कालनेमिनिघ्ने नमः

ॐ वीराय नमः

ॐ शौरये नमः

ॐ शूरजनेश्वराय नमः

ॐ त्रिलोकात्मने नमः

ॐ त्रिलोकेशाय नमः

ॐ केशवाय नमः

ॐ केशिघ्ने नमः

ॐ हरये नमः

ॐ कामदेवाय नमः

ॐ कामपालाय नमः

ॐ कामिने नमः

ॐ कांताय नमः

ॐ कृतागमाय नमः

ॐ अनिर्देश्यवपुषे नमः

ॐ विष्णवे नमः

ॐ वीराय नमः

ॐ अनंताय नमः

ॐ धनंजयाय नमः

ॐ ब्रह्मण्याय नमः

ॐ ब्रह्मकृते नमः

ॐ ब्रह्मिणे नमः

ॐ ब्रह्मणे नमः

ॐ ब्रह्मविवर्धनाय नमः

ॐ ब्रह्मविदे नमः

ॐ ब्राह्मणाय नमः

ॐ ब्रह्मरूपिणे नमः

ॐ ब्रह्मज्ञाय नमः

ॐ ब्राह्मणप्रियाय नमः

ॐ महाक्रमाय नमः

ॐ महाकर्मणे नमः

ॐ महातेजसे नमः

ॐ महोरगाय नमः

ॐ महाक्रतवे नमः

ॐ महायज्वने नमः

ॐ महायज्ञाय नमः

ॐ महाहविषे नमः

ॐ स्तव्याय नमः

ॐ स्तवप्रियाय नमः

ॐ स्तोत्राय नमः

ॐ स्तुतये नमः

ॐ स्तोत्रे नमः

ॐ रणप्रियाय नमः

ॐ पूर्णाय नमः

ॐ पूरयित्रे नमः

ॐ पुण्याय नमः

ॐ पुण्यकीर्तये नमः

ॐ अनामयाय नमः

ॐ मनोजवाय नमः

ॐ तीर्थकराय नमः

ॐ वसुरेतसे नमः

ॐ वसुप्रदाय नमः

ॐ वासुदेवाय नमः

ॐ वसवे नमः

ॐ वसुमनसे नमः

ॐ हविषे नमः

ॐ सद्गतये नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सत्कृतये नमः ७००

ॐ सत्तायै नमः

ॐ सद्भूतये नमः

ॐ सत्परायणाय नमः

ॐ शूरसेनाय नमः

ॐ युद्धश्रेष्ठाय नमः

ॐ सन्निवासाय नमः

ॐ सुयामुनाय नमः

ॐ भूतावासाय नमः

ॐ वासुदेवाय नमः

ॐ सर्वासुनिलयाय नमः

ॐ अनलाय नमः

ॐ दर्पघ्ने नमः

ॐ दर्पदाय नमः

ॐ दृप्ताय नमः

ॐ दुर्धराय नमः

ॐ अपराजिताय नमः

ॐ विश्वमूर्तये नमः

ॐ महामूर्तये नमः

ॐ दीप्तमूर्तये नमः

ॐ अमूर्तिमते नमः

ॐ अनेकमूर्तये नमः

ॐ अव्यक्ताय नमः

ॐ शतमूर्तये नमः

ॐ शताननाय नमः

ॐ एकाय नमः

ॐ नैकाय नमः

ॐ सेवाय नमः

ॐ काय नमः

ॐ कस्मै नमः

ॐ यस्मै नमः

ॐ तस्मै नमः

ॐ पद्मानुत्तमाय नमः

ॐ लोकबंधवे नमः

ॐ लोकनाथाय नमः

ॐ माधवाय नमः

ॐ भक्तवत्सलाय नमः

ॐ सुवर्णवर्णाय नमः

ॐ हेमांगाय नमः

ॐ वरांगाय नमः

ॐ चंदनांगदिने नमः

ॐ वीरघ्ने नमः

ॐ विषमाय नमः

ॐ शून्याय नमः

ॐ धृताशिषे नमः

ॐ अचलाय नमः

ॐ चलाय नमः

ॐ आमनिने नमः

ॐ मानदाय नमः

ॐ मान्याय नमः

ॐ लोकस्वामिने नमः

ॐ त्रिलोकधृषे नमः

ॐ सुमेधसे नमः

ॐ मेधजाय नमः

ॐ धन्याय नमः

ॐ सत्यमेधसे नमः

ॐ धराधराय नमः

ॐ तेजोवृषाय नमः

ॐ द्युतिधराय नमः

ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः

ॐ प्रग्रहाय नमः

ॐ निग्रहाय नमः

ॐ व्यग्राय नमः

ॐ नैकशृंगाय नमः

ॐ गदाग्रजाय नमः

ॐ चतुर्मूर्तये नमः

ॐ चतुर्बाहवे नमः

ॐ चतुर्व्यूहाय नमः

ॐ चतुर्गतये नमः

ॐ चतुरात्मने नमः

ॐ चर्तुभावाय नमः

ॐ चतुर्वेदविदे नमः

ॐ एकपदे नमः

ॐ समावर्ताय नमः

ॐ निवृत्तात्मने नमः

ॐ दुर्जयाय नमः

ॐ दुरतिक्रमाय नमः

ॐ दुर्लभाय नमः

ॐ दुर्गमाय नमः

ॐ दुर्गाय नमः

ॐ दुरावासाय नमः

ॐ दुरारिघ्ने नमः

ॐ शुभांगाय नमः

ॐ लोकसारंगाय नमः

ॐ सुतंतवे नमः

ॐ तंतुवर्धनाय नमः

ॐ इंद्रकर्मणो नमः

ॐ महाकर्मणे नमः

ॐ कृतकर्मणे नमः

ॐ कृतागमाय नमः

ॐ उद्भवाय नमः

ॐ सुंदराय नमः

ॐ सुंदाय नमः

ॐ रत्नाभाय नमः

ॐ सुलोचनाय नमः

ॐ अर्काय नमः

ॐ वाजसनाय नमः

ॐ शृंगिणे नमः

ॐ जयंताय नमः

ॐ सर्वविज्जयिने नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सुवर्णबिंदवे
नमः८००

ॐ अक्षोभ्याय नमः

ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः

ॐ महाह्रदाय नमः

ॐ महागर्ताय नमः

ॐ महाभूताय नमः

ॐ महानिधये नमः

ॐ कुमुदाय नमः

ॐ कुंदराय नमः

ॐ कुंदाय नमः

ॐ पर्जन्याय नमः

ॐ पावनाय नमः

ॐ अनिलाय नमः

ॐ अमृतांशाय नमः

ॐ अमृतवपुषे नमः

ॐ सर्वज्ञाय नमः

ॐ सर्वतोमुखाय नमः

ॐ सुलभाय नमः

ॐ सुव्रताय नमः

ॐ सिद्धाय नमः

ॐ शत्रुजिते नमः

ॐ शत्रुतापनाय नमः

ॐ न्यग्रोधाय नमः

ॐ उदुंबराय नमः

ॐ अश्वत्थाय नमः

ॐ चाणूरांध्रनिषूदनाय नमः

ॐ सहस्रार्चिषे नमः

ॐ सप्तजिह्वाय नमः

ॐ सप्तैधसे नमः

ॐ सप्तवाहनाय नमः

ॐ अमूर्तये नमः

ॐ अनघाय नमः

ॐ अचिंत्याय नमः

ॐ भयकृते नमः

ॐ भयनाशनाय नमः

ॐ अणवे नमः

ॐ बृहते नमः

ॐ कृशाय नमः

ॐ स्थूलाय नमः

ॐ गुणभृते नमः

ॐ निर्गुणाय नमः

ॐ महते नमः

ॐ अधृताय नमः

ॐ स्वधृताय नमः

ॐ स्वास्याय नमः

ॐ प्राग्वंशाय नमः

ॐ वंशवर्धनाय नमः

ॐ भारभृते नमः

ॐ कथिताय नमः

ॐ योगिने नमः

ॐ योगीशाय नमः

ॐ सर्वकामदाय नमः

ॐ आश्रमाय नमः

ॐ श्रमणाय नमः

ॐ क्षामाय नमः

ॐ सुपर्णाय नमः

ॐ वायुवाहनाय नमः

ॐ धनुर्धराय नमः

ॐ धनुर्वेदाय नमः

ॐ दंडाय नमः

ॐ दमयित्रे नमः

ॐ दमाय नमः

ॐ अपराजिताय नमः

ॐ सर्वसहाय नमः

ॐ नियंत्रे नमः

ॐ नियमाय नमः

ॐ यमाय नमः

ॐ सत्ववते नमः

ॐ सात्विकाय नमः

ॐ सत्याय नमः

ॐ सत्यधर्मपरायणाय नमः

ॐ अभिप्रायाय नमः

ॐ प्रियार्हाय नमः

ॐ अर्हाय नमः

ॐ प्रियकृते नमः

ॐ प्रीतिवर्धनाय नमः

ॐ विहायसगतये नमः

ॐ ज्योतिषे नमः

ॐ सुरुचये नमः

ॐ हुतभुजे नमः

ॐ विभवे नमः

ॐ रवये नमः

ॐ विरोचनाय नमः

ॐ सूर्याय नमः

ॐ सवित्रे नमः

ॐ रविलोचनाय नमः

ॐ अनंताय नमः

ॐ हुतभुजे नमः

ॐ भोक्त्रे नमः

ॐ सुखदाय नमः

ॐ नैकजाय नमः

ॐ अग्रजाय नमः

ॐ अनिर्विण्णाय नमः

ॐ सदामर्षिणे नमः

ॐ लोकाधि-ष्ठानाय नमः

ॐ अद्भुताय नमः

ॐ सनातनाय नमः

ॐ सनातनतमाय नमः

ॐ कपिलाय नमः

ॐ कपये नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ अव्ययाय नमः १००

ॐ स्वस्तिदाय नमः

ॐ स्वस्तिकृते नमः

ॐ स्वस्तिने नमः

ॐ स्वस्तिभुजे नमः

ॐ स्वस्तिदक्षिणाय नमः

ॐ अरौद्राय नमः

ॐ कुंडलिने नमः

ॐ चक्रिणे नमः

ॐ विक्रमिणे नमः

ॐ ऊर्जितशासनाय नमः

ॐ शब्दातिगाय नमः

ॐ शब्दसहाय नमः

ॐ शिशिराय नमः

ॐ शर्वरीकराय नमः

ॐ अक्रूराय नमः

ॐ पेशलाय नमः

ॐ दक्षाय नमः

ॐ दक्षिणाय नमः

ॐ क्षमिणांवराय नमः

ॐ विद्वत्तमाय नमः

ॐ वीतभयाय नमः

ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः

ॐ उत्तारणाय नमः

ॐ दुष्कृतिघ्ने नमः

ॐ पुण्याय नमः

ॐ दुःस्वप्ननाशनाय नमः

ॐ वीरघ्ने नमः

ॐ रक्षणाय नमः

ॐ संताय नमः

ॐ जीवनाय नमः

ॐ पर्यवस्थिताय नमः

ॐ अनंतरूपाय नमः

ॐ अनंताश्रिये नमः

ॐ जित्मन्यवे नमः

ॐ भयापहाय नमः

ॐ चतुरस्त्राय नमः

ॐ गभीरात्मने नमः

ॐ विदिशाय नमः

ॐ व्यादिशाय नमः

ॐ दिशाय नमः

ॐ अनादये नमः

ॐ भुवे नमः

ॐ भुवोलक्ष्म्यै नमः

ॐ सुवीराय नमः

ॐ रुचिरांगदाय नमः

ॐ जननाय नमः

ॐ जनजन्मादये नमः
ॐ भीमाय नमः
ॐ भीमपराक्रमाय नमः
ॐ आधारनिलयाय नमः
ॐ धात्रे नमः
ॐ पुष्पहासाय नमः
ॐ प्रजागराय नमः
ॐ ऊर्ध्वगाय नमः
ॐ सत्पथाचाराय नमः
ॐ प्राणदाय नमः
ॐ प्रणवाय नमः
ॐ पणाय नमः
ॐ प्रमाणाय नमः
ॐ प्राणनिलयाय नमः
ॐ प्राणभृते नमः

ॐ प्राणजीवनाय नमः

ॐ तत्त्वाय नमः

ॐ तत्त्वविदे नमः

ॐ एकात्मने नमः

ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय नमः

ॐ भूर्भुवःस्वस्तरवे नमः

ॐ ताराय नमः

ॐ सपित्रे नमः

ॐ प्रपितामहाय नमः

ॐ यज्ञाय नमः

ॐ यज्ञपतये नमः

ॐ यज्वने नमः

ॐ यज्ञांगाय नमः

ॐ यज्ञवाहनाय नमः

ॐ यज्ञभृते नमः

ॐ यंज्ञकृते नमः

ॐ यज्ञिने नमः

ॐ यज्ञभुजे नमः

ॐ यज्ञसाधनाय नमः

ॐ यज्ञांतकृते नमः

ॐ यज्ञगुह्याय नमः

ॐ अन्नाय नमः

ॐ अन्न दाय नमः

ॐ आत्मयोनये नमः

ॐ स्वयंजाताय नमः

ॐ वैखानाय नमः

ॐ सामगायनाय नमः

ॐ देवकीनंदनाय नमः

ॐ स्त्रष्ट्रे नमः

ॐ क्षितीशाय नमः

ॐ पापनाशनाय नमः

ॐ शंखभृते नमः

ॐ नंदकिने नमः

ॐ चक्रिणे नमः

ॐ शार्ङ्गधन्वने नमः

ॐ गदाधराय नमः

ॐ रथांगपाणये नमः

ॐ अक्षोभ्याय नमः

तेजोऽसि शुक्रमऽसि
ज्योतिरऽसि धामाऽसि

ॐ सर्वप्रहरणायुधाय
नमः १०००

विजयेश्वर-ज्योतिष कार्यालय से छपी पुस्तकें मिलने के पते :-

1. विजयेश्वर धार्मिक पुस्तक भण्डार
तालाब तिलो जम्मू

2. जे. के. बुक शाप
तालाब तिलो जम्मू

3. भसीन स्टेशनरी स्टोर
पक्का-ढंगा जम्मू

4. यूनिवर्सल निवज़ एज़न्सी
उधमपुर - जम्मू

5. देहली में
तनेजा एलकट्रिक्लज़ एण्ड टय्ट हाऊस
रघुनाथ बाजार अमरकालोनी
लाजपतनगर-देहली - 6429046
शाप नं. 45 ब्रह्मपुत्र शापिंग कम्पलेक्स
सैक्टर - 29 नयोडा - देहली